समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

विद्यार्थी विशेषांक

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

• प्रकाशन दिनांक : १५ मई २०२१ • वर्ष : २४ • अंक : ११ (निरंतर अंक : २८७)
• भाषा : हिन्दी • पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

सफलता की बुलंदियों पर चढ़कर
प्रभु के गीत गाते-गुनगुनाते हैं वो,
पूज्य बापूजी की अमृतवर्षी दृष्टि में
उनके बताये मार्ग से चले आते हैं जो ।

छात्रों के महान आचार्य पूज्य बापूजी

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

स्मृति-विकास के सुंदर उपाय

जिसकी स्मरणशक्ति तीव्र है वह प्रत्येक कार्य विधिपूर्वक करता है तथा अपने कार्यों में आशातीत सफलता प्राप्त करता है । स्मृति उन्नत होने से ब्रह्मसाक्षात्कार में भी सफलता मिलती है । (विस्तृतरूप से पढ़ें पृष्ठ ८ पर)

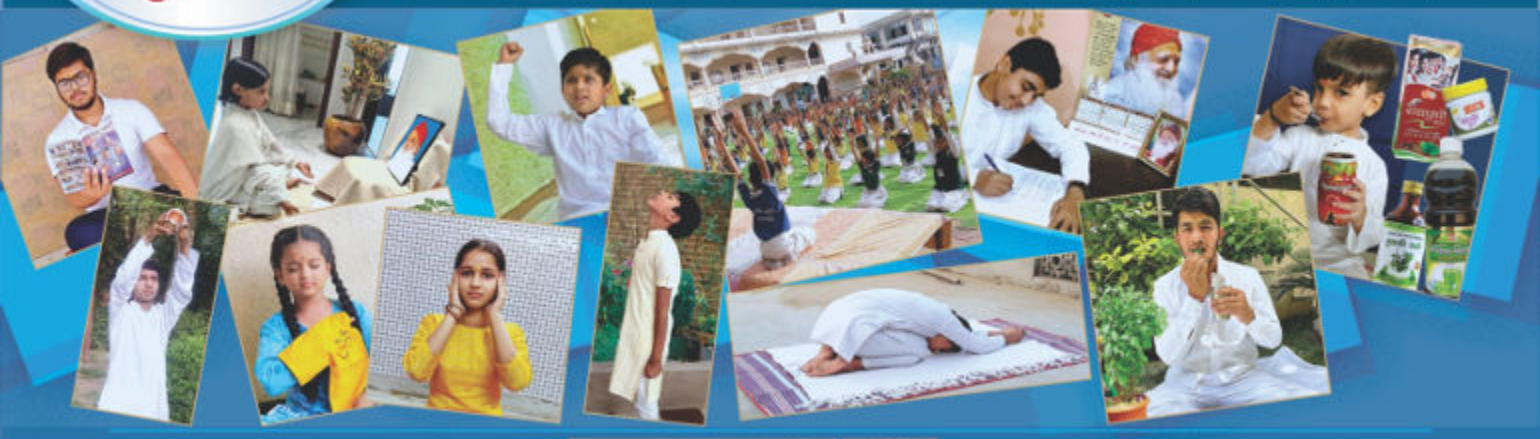

यज्ञोपवीत संस्कार क्यों ? १७

गुरुकुल-शिक्षा से मिले सुसंस्कार व सफलता १३

पूज्य बापूजी का स्वास्थ्य-प्रसाद (ग्रीष्म ऋतु विशेष) १४

मनोबल बढ़ाने के चार सूत्र

१ नियम

आप अपने जीवन में कोई नियम धारण करेंगे तो आपका मनोबल बढ़ेगा। यह नियम लीजिये कि इतना जप, पाठ, स्वाध्याय, इतनी पूजा किये बिना हम भोजन नहीं करेंगे। जिस दिन नियम करने में देर हो जाय उस दिन थोड़ा कष्ट सहिये, आपका मनोबल बढ़ेगा। जो तकलीफ सहने को तैयार नहीं है उसका मन कमजोर हो जाता है।

२ श्रद्धा

आप ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु, परमात्मा और वेद-शास्त्रों पर श्रद्धा कीजिये कि वे हमारी रक्षा करेंगे। युद्धभूमि में एक सैनिक लड़ता है तो उसे यह विश्वास होता है कि 'हमारे पीछे सेनापति है, राष्ट्रपति है, सारा राष्ट्र है, हमको सहायता मिलेगी और हम युद्ध में विजयी होंगे।' इसी तरह आप जो भी काम करें, इस विश्वास के साथ करें कि आपके पीछे आपके शास्त्र (जीवन का संविधान) हैं, आपके सद्गुरुदेव हैं, प्रभु हैं। आपके जीवन में श्रद्धा बनी रहेगी तो आपका मनोबल भी बना रहेगा।

३ समीक्षा

आपके जीवन में जब कुछ खट्टे-मीठे अनुभव आयें तब समीक्षा कीजिये कि 'ये कटु अनुभव दिख रहे हैं लेकिन इनके पीछे परमात्मा की कितनी कृपा है, करुणा है!' समीक्षा के अभाव में आप ईश्वर को, भाग्य को, समाज को, अपने पुण्यों को और कर्मों को कोसने लगेंगे। उस समय शायद पता न चले पर आप फरियाद की खाई में गिरकर और दुःख बढ़ा लेंगे। उससे आपकी शक्ति क्षीण होगी परंतु समीक्षा करने पर आप बिना धन्यवाद दिये रह नहीं सकते। प्रतीक्षा उसकी होती है जो अप्राप्त हो और समीक्षा प्राप्त वस्तु-परिस्थिति की की जाती है। हर अवस्था में परमात्मा की कृपा निहारने से, कृपा की समीक्षा करने से शांति स्वाभाविक आयेगी, आपका परमात्म-चिंतन व मनोबल बढ़ेगा।

४ भगवन्नाम उच्चारण

इससे भी मनोबल में वृद्धि होती है। जब आप भगवान के नाम का संकीर्तन करते हैं, तब आपके अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय - सभी कोशों के एक-एक अंश आपस में मिल जाते हैं। भगवन्नाम-उच्चारण में आपके पाँचों कोश एक साथ मिलकर ऐसी क्रिया को पूर्ण करने में लगते हैं जो आपके मानसिक बल को बढ़ानेवाली है।

मनोबल को बढ़ाने के लिए अपने जीवन में उपरोक्त चार साधनों को अपना लीजिये।

लोक कल्याण सेतु

मासिक
समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २४ अंक : ११ (निरंतर अंक : २८७)
प्रकाशन दिनांक : १५ मई २०२१ मूल्य : ₹ ३.५०
पृष्ठ संख्या : २४ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
राकेशसिंह आर. चंदेल
प्रकाशन-स्थल :
संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण-स्थल :
हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५.
सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

*Email: lokkalyansetu@ashram.org,
*ashramindia@ashram.org
*Website: www.lokkalyansetu.org
www.ashram.org

लोक कल्याण सेतु' रुद्राक्ष मनका योजना

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ३५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ६०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १३०		
(४) आजीवन :	₹ ३४०		

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

- ऐसे लोग देर-सवेर परमात्म-तत्त्व को पा लेते हैं.....४
- लक्ष्य का निश्चय होना अति आवश्यक है..... ७
- सच्ची क्षमा.....८
- विद्यालाभ व अद्भुत विद्वत्ता की प्राप्ति का उपाय.....९
- स्मृति-विकास के सुंदर उपाय.....९
- मान पुड़ी है जहर की.....१२
- हरिद्वार कुम्भ में संत-समाज के हृदयोद्गार - धर्मेन्द्र गुप्ता..... १३
- गुरुकुल-शिक्षा से मिले सुसंस्कार व सफलता १४
- साधक वेशधारी ऐसे ठगों से सावधान !..... १५
- गर्मीशामक व विविध समस्याओं में लाभदायी.....१६
- गर्मीजन्य स्वास्थ्य-समस्याओं में लाभकारी उत्पाद..... १६
- पूज्य बापूजी का स्वास्थ्य-प्रसाद..... १७
- स्वास्थ्य-लाभकारी प्रयोग.....१८
- चरित्र का प्रधान अंग : शील - संत देवराहा बाबा....१९
- यज्ञोपवीत संस्कार क्यों ?..... २०
- ...यह भी ध्यान में रखें - समर्थ रामदासजी.....२१
- दोषों को दबायें नहीं, ईमानदारी से निकालें.....२२

* 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। * 'अराधना' चैनल जम्मू में JK Cable पर उपलब्ध है।

*** विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ***

अराधना
रोज सुबह ७:३० व रात्रि ८:३० बजे

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १०-०० बजे

मंगलमय
www.ashram.org/live
पर उपलब्ध

विद्यालाभ व अद्भुत विद्वत्ता की प्राप्ति का उपाय

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वाग्वादिनि सरस्वति मम जिह्वाग्रे वद वद ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः स्वाहा।' यह मंत्र २६ जून २०२१ को प्रातः ४:२६ से रात्रि ११:४५ बजे तक अथवा २३ जुलाई २०२१ को दोपहर २:२६ से रात्रि ११:४५ बजे तक १०८ बार जप लें और फिर मंत्रजप के बाद उसी दिन रात्रि ११ से १२ बजे के बीच जीभ पर लाल चंदन से 'ह्रीं' मंत्र लिख दें। जिसकी जीभ पर यह मंत्र इस विधि से लिखा जायेगा उसे विद्यालाभ व अद्भुत विद्वत्ता की प्राप्ति होगी।

(ध्यान दें : गुजरात व महाराष्ट्र में यह योग केवल २३ जुलाई को है।)

स्मृति का विकास अत्यंत आवश्यक कार्य है। जिसकी स्मरणशक्ति तीव्र है और जो चीजों को बहुत दिनों तक याद रख सकता है वह प्रत्येक कार्य विधिपूर्वक करता है तथा अपने कार्यों में आशातीत सफलता प्राप्त करता है। धारणाशक्ति-सम्पन्न विद्यार्थी सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते हैं। स्मृति उन्नत होने से ब्रह्मसाक्षात्कार में भी सफलता प्राप्त होती है।

स्मृति-विकास में सहायक बातें

स्मृतिशक्ति के विकास में ग्रहणशक्ति और धारणाशक्ति मददरूप हैं। प्रखर स्मृति और धारणाशक्ति सम्पन्न व्यक्ति बड़े और विस्तृत कार्यों को पलक झपकते ही कर सकता है। किसी भी विषय या कला में वह अल्प समय में ही महारत हासिल कर सकता है। निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान दें –

(१) ब्रह्मचर्य व उचित आहार-विहार : ब्रह्मचर्य-पालन, समुचित आहार और इन्द्रियसंयम स्मृतिशक्ति के विकास में अति महत्त्वपूर्ण हैं। वीर्यशक्ति का चित्त और मस्तिष्क की कोशिकाओं के

हरिद्वार कुम्भ में

संत-समाज के हृदयोद्‌गार

महामंडलेश्वर श्री महंत रामेश्वरदासजी महाराज, जम्मू : आशाराम बापूजी आज जेल में हैं तो क्या उनके करोड़ों समर्थक, शिष्य उनसे विमुख हुए हैं ? नहीं, उनकी जो आस्था है वह बड़ी मजबूत है और वे श्रद्धा-विश्वास को लेकर चल रहे हैं। भारतीय संस्कृति के जो आधार हैं वे संत हैं। संतों में कोई खोट नहीं है परंतु जो हमारी भारतीय संस्कृति को तोड़ने के मौके की तलाश में रहते हैं उनके द्वारा संतों को बदनाम करने की ऐसी परिस्थितियाँ, व्यवस्थाएँ बना दी जाती हैं, जो सरासर गलत है।

महामंडलेश्वर श्री भैयादासजी महाराज :

आशारामजी बापू एक सच्चे सनातनी थे और हैं। उन्होंने सनातन संस्कृति की रक्षा व उसके प्रचार-प्रसार का बहुत कार्य किया है। वे निर्दोष हैं और उनके विरुद्ध जो भी षड्यंत्र किया जा रहा है वह गलत है। हमारे संत-समाज को एक साथ आकर आवाज उठानी चाहिए। कई ऐसे केस सामने आते हैं कि जो लोग लगातार बलात्कार करते हैं तथा जिनके ऐसे विडियो भी होते हैं फिर भी उनकी जमानत हो जाती है और आशारामजी बापू ने तो ऐसा कुछ भी नहीं किया फिर भी उनको जमानत तक नहीं मिल रही है !

मैं सरकार से निवेदन करता हूँ कि उनकी उम्र को देखते हुए उन्हें जल्द-से-जल्द रिहा किया जाय।

संत श्री राधे दंडी स्वामीजी महाराज, सीताराम धाम, हरिद्वार : आशारामजी बापू पर झूठा इल्जाम लगाया गया है। उन्हें बिना वजह बंद किया गया, उनका कोई जुर्म नहीं था। उनकी अभी तक जमानत तक नहीं हो सकी यह बड़े अफसोस की बात है !

संत श्री नारायण स्वामीजी, संत पथिकजी के शिष्य, संत पुरी साधना धाम, हरिद्वार : संत आशारामजी बापू ने संतों के लिए, संस्कृति की रक्षा के लिए क्या नहीं किया ! आज यदि हमारे गुरुदेव भगवान (संत पथिकजी) का यह समाधि-मंदिर दिख रहा है तो इसके पीछे संत आशारामजी का ही हाथ है । इस समय देश में संतों पर उनके द्वारा न किये जानेवाले आचरणों को आरोपित करके उन्हें बदनाम करने का कुचक्र चल रहा है । सारे संतों को एकजुट हो के इस विचारधारा को हटाने का प्रयास करना चाहिए ताकि इस संसार में जो धर्म का नाश हो रहा है वह रुके।

स्वामी श्री अमलानंदजी महाराज, हरिद्वार : निर्दोष संतों को सताने का परिणाम बहुत बुरा आता है । प्रकृति पहले सहती चली जाती है पर जब सहन नहीं कर पाती तो उसका परिणाम बहुत बुरा आता है।

बापू का हृदय बड़ा निर्मल है, बहुत शांत है। जो विरोधी हैं उनको अभी नहीं दिखेगा किंतु बाद में जब दिखेगा तब वे सब भी बापू के अनुयायी बन जायेंगे। (संकलक : धर्मेन्द्र गुप्ता)

गुरुकुल-शिक्षा से मिले सुसंस्कार व सफलता

रवि प्रजापति, गांधीनगर (सचल दूरभाष : ७०१६९३२४४६) : मैंने कक्षा ५वीं से १२वीं तक अहमदाबाद गुरुकुल में अध्ययन किया है । गुरुकुल की जैसी शिक्षा-व्यवस्था है वैसी आज के जमाने में और कहीं मिलना सम्भव नहीं है । गुरुकुल में एक ओर तो हमारी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा-पद्धति की तर्ज पर शास्त्रों व महापुरुषों द्वारा उपदेशित धर्म-सिद्धांतों से विद्यार्थियों के जीवन को रँगा जाता है, वहीं दूसरी ओर लौकिक शिक्षा की बुलंदियों को छूने के गुर भी सिखाये जाते हैं। इसी वजह से गुरुकुल के विद्यार्थी जिस क्षेत्र में जाते हैं उसमें सफल होकर ही रहते हैं। २०२० में गुजरात लोक सेवा आयोग (ऋझडउ) की परीक्षा में पुलिस इंस्पेक्टर की चयनसूची में मुझे गुजरात में ५वाँ स्थान प्राप्त हुआ।

मैं गुरुदेव के बताये सच्चाई, ईमानदारी व कर्तव्यपालन के मार्ग पर चलूँ और जरूरतमंदों की मदद कर सकूँ एवं समदृष्टि रखते हुए सबसे न्यायपूर्ण व्यवहार कर सकूँ ऐसी गुरुवर के चरणों में प्रार्थना है।

संदीप शर्मा, छिंदवाड़ा (सचल दूरभाष : ७४१५६७७१८६) : बचपन में हमारी आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। मेरी माँ आश्रम में बड़ बादशाह की परिक्रमा करके मेरे अच्छे भविष्य के लिए प्रार्थना करती थीं। उनकी प्रार्थना फली और मुझे कम फीस में गुरुकुल में प्रवेश दे दिया गया और मेरे कपड़ों व किताबों की व्यवस्था भी करवा दी गयी। मैं गुरुकुल में ८वीं से १२वीं कक्षा तक पढ़ा । फिर गुरुकृपा से एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई की भी व्यवस्था हो गयी। अभी मैं छिंदवाड़ा में सरकारी अस्पताल में चिकित्सा अधिकारी (मेडिकल ऑफिसर) के पद पर कार्यरत हूँ। पूज्य बापूजी ने मुझ पर इतनी कृपा की है कि मैं और मेरा परिवार जीवनभर उनके ऋणी रहेंगे।

हथकड़ी से बँधा ठग गोविंदा पवार

साधक वेशधारी ऐसे ठगों से सावधान ! शातिर ठग गोविंदा पवार के काले कारनामे

कई बार कुछ लोग अपने को साधक बताकर लोगों को विश्वास में लेते हैं और फिर उनको ठग लेते हैं। यहाँ एक ऐसे ही ठग गोविंदा पवार की पोल खोली जा रही है।

भालेगाँव बाजार, तह. खामगाँव, जिला बुलढाणा (महाराष्ट्र) निवासी गोविंदा पवार, पुत्र अनिल पवार सेवा का बहाना बनाकर पहले साधकों से पहचान बनाता था और फिर उन्हें लूटने का काम करता था। यहाँ गोविंदा के कुछ काले कारनामे दिये जा रहे हैं :

१५ सितम्बर २०२० को गोविंदा नरवाना आश्रम (हरियाणा) आया और अनुष्ठान का बहाना बनाकर वहाँ रुका। आश्रम-संचालक को जरूरी कार्य से बाहर जाना पड़ा तो गोविंदा ने मौके का फायदा उठाकर आश्रम के चाँदी के बर्तन, इनवर्टर-बैटरी, भंडारे के बर्तन एवं लोहे के ३ दरवाजे बेच दिये और २५,००० रुपये चुरा के भाग गया। थाना नरवाना सिटी में गोविंदा के खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज की गयी।

गोविंदा केवल चोरी, ठगी, बदमाशी तक ही सीमित नहीं था बल्कि लड़कियों के साथ गलत हरकतें करने और उन्हें जान से मारने तक की धमकी देने जैसे कुकर्मों में भी लिप्त था। हरिपुर कलां (जिला देहरादून) में रहनेवाली एक युवती द्वारा थाना भेड़ाघाट (जिला जबलपुर) में दर्ज एफ.आई.आर. से इस बात का खुलासा हुआ है। युवती की शिकायत पर भेड़ाघाट पुलिस ने शातिर गोविंदा को धर दबोचा और संबंधित कोर्ट ने उसे जबलपुर की धुआंधार जेल में भेज दिया। जैसे ही नरवाना पुलिस को इसकी जानकारी मिली वह उसे नरवाना ले आयी और नरवाना कोर्ट में पेश कर ४ दिन की पुलिस रिमांड की स्वीकृति ली। वहाँ के

एस.एच.ओ. महेंदरसिंह ने बताया कि ''गोविंदा पवार ने आशाराम बापू के आश्रम से चोरी किया हुआ माल कहाँ-कहाँ बेचा है वह उगल दिया है। पुलिस सामान की रिकवरी (वसूली) करने में लगी है।''

गोविंदा कभी सेवा का निमित्त बताकर लोगों से पैसे लेता था तो कभी किसी व्यापार में इन्वेस्ट करने का लालच दे के बड़ी-बड़ी रकम लोगों से ऐंठता था।

वडोदरा की भारती शर्मा ने गोविंदा पवार के खिलाफ शिकायत दर्ज करवायी कि 'गोविंदा ने कॉपर सप्लाई के धंधे में अच्छा लाभ बताकर उसमें इन्वेस्ट करने के लिए मुझसे १० लाख रुपये और रीटा बहन से ५ लाख रुपये लिये थे। पैसे माँगने पर गोविंदा ने खानापूर्ति करने के लिए अपने दोस्त की दुकान से चुराकर ७.५-७.५ लाख के २ फर्जी चेक दे दिये।'

कुरुक्षेत्र निवासी जूना अखाड़ा के महंत संदीप पुरी ने पुलिस को बताया कि ''२ साल पहले गोविंदा ने स्टॉल लगाने के नाम पर मुझसे २ दिन के लिए ६५ हजार रुपये लिये थे पर आज तक वापस नहीं दिये।''

दिल्ली के एक साधक ने बताया कि ''गोविंदा

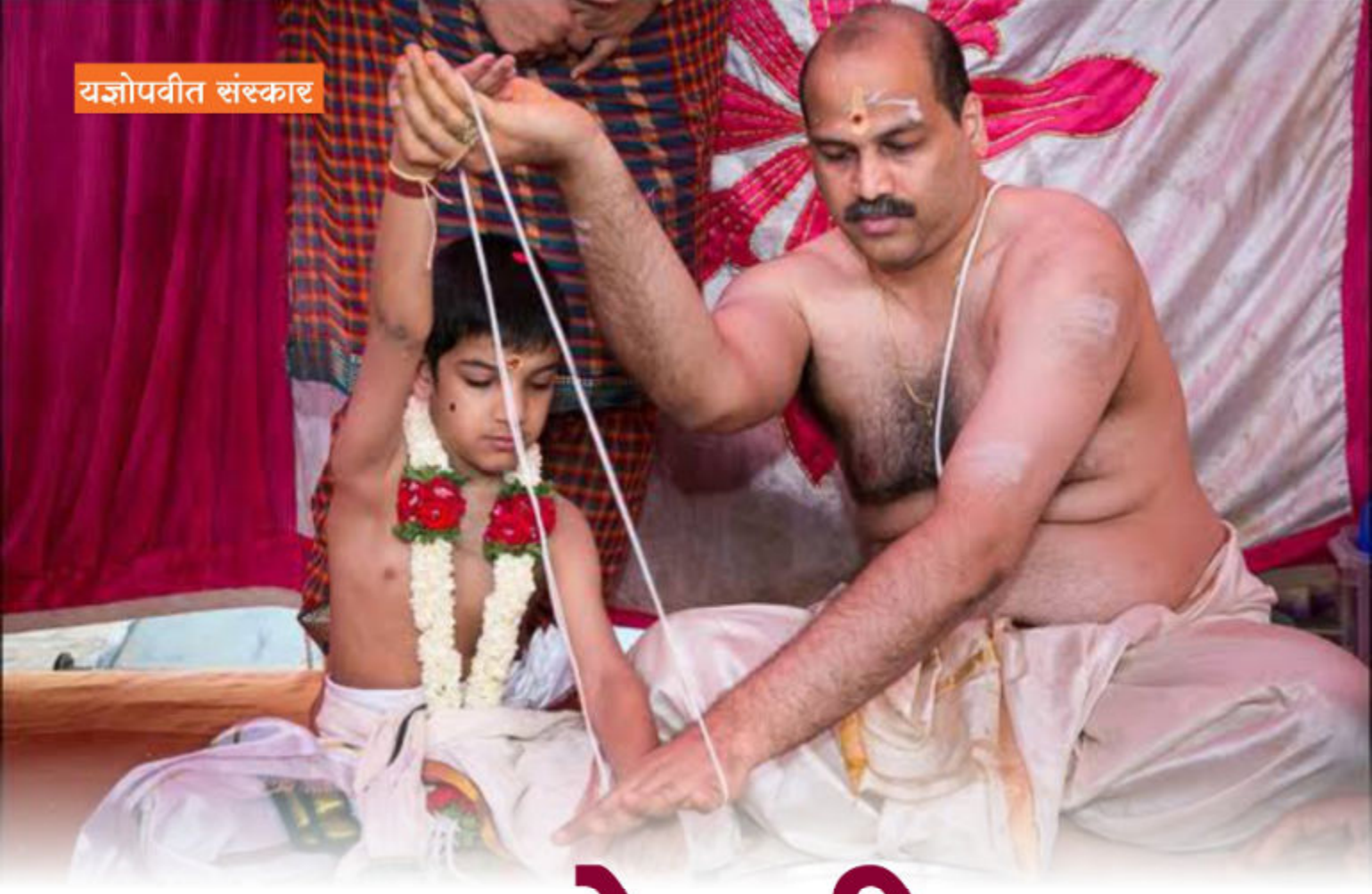

यज्ञोपवीत

संस्कार क्यों ?

१६ संस्कारों में १०वाँ संस्कार है 'उपनयन (यज्ञोपवीत या जनेऊ) संस्कार'। इसमें बच्चों को यज्ञोपवीत पहनाकर ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रविष्ट कराया जाता है। इसके बिना बालक किसी भी श्रौत-स्मार्त कर्म (श्रुति-स्मृति विहित कर्म) का अधिकारी नहीं होता। इसे यज्ञोपवीत संस्कार, जनेऊ संस्कार तथा व्रत-बंध भी कहा जाता है। व्रत-बंध का अर्थ है कल्याणकारी व्रतों का बंधन।

समष्टि के साथ जोड़ता है यज्ञोपवीत

यज्ञोपवीत देखने में तो ३ पतले धागों का एक गठबंधन है परंतु उस धागे में हमारे ऋषियों ने ऐसा तत्त्वज्ञान जोड़ा है जिसे अपनाकर व्यक्ति सच्चे अर्थों में मनुष्य बन सकता है। यज्ञोपवीत के द्वारा उसे एक नयी चेतना, एक नयी विशाल सृष्टि के साथ जोड़ दिया जाता है इसलिए इस संस्कार को उसका दूसरा जन्म और 'द्विजत्व संस्कार' भी कहा गया है।

मन का स्वभाव होता है पतन की ओर जाना। कहीं बुरे संस्कारों में पड़कर वह उच्छृंखल न हो जाय इसलिए व्यक्ति के कंधों पर यज्ञोपवीत के तीन धागों के रूप में ३ ऋणों को चुकाने की जिम्मेदारी रख दी जाती है। ये ३

नोटबुक व रजिस्टर

कम मूल्य, उच्च गुणवत्ता व आकर्षक डिजाइन के साथ सुसंस्कारों की अभिव्यक्ति

और भी क्या है इनमें खास ?

* हर पृष्ठ पर प्रेरक सुवाक्य
* एकाग्रता व स्मरणशक्ति वर्धक उपाय, परीक्षा में सफल होने की युक्तियाँ, स्वास्थ्य की कुंजियाँ । * महापुरुषों के प्रेरक संदेश एवं प्रसंग व प्रेरणादायी कहानियाँ ।... तथा और भी बहुत कुछ !

अपने व आसपास के बच्चों को इन नोटबुकों से सही दिशा व सुसंस्कार सहज में दिलायें, आम नोटबुकों पर छपनेवाली जीवनशक्ति-विनाशक सामग्री से कोमलचित्त बच्चों को बचायें ।

नोटबुक ९६ पेज	₹ १०	लाँग नोटबुक १७६ पेज (बॉक्स)	₹ २८	A4 लाँग रजिस्टर १६० पेज	₹ ३५
नोटबुक १९६ पेज	₹ २०	लाँग नोटबुक २४८ पेज	₹ ३५	A4 लाँग रजिस्टर १९२ पेज	₹ ४०
लाँग नोटबुक ९६ पेज	₹ १५	रजिस्टर ९६ पेज	₹ १७	A4 लाँग रजिस्टर १९२ पेज (practical)	₹ ४०
लाँग नोटबुक १२८ पेज	₹ २०	रजिस्टर १९२ पेज	₹ ३५	A4 लाँग रजिस्टर २९२ पेज	₹ ७०
लाँग नोटबुक १७६ पेज*	₹ २८	कॉलेज रजिस्टर १९२ पेज	₹ ३८	A4 लाँग रजिस्टर ४०४ पेज	₹ ९०

* 'लाँग नोटबुक १७६ पेज' 2 Line, 4 Line व 3 in 1 में भी उपलब्ध है ।

युवा सेवा संघ से जुड़े भाई, अन्य युवक तथा साधक-साधिकाएँ जन-जन तक ये प्रेरणादायी नोटबुकें व रजिस्टर पहुँचाने की सेवा करें।
सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२ (साहित्य विभाग), ८२३८०९१०११ (युवा सेवा संघ मुख्यालय) Visit: bit.ly/notebook-register

विद्यार्थियों के लिए विशेष साहित्य

नयी पुस्तिका आओ रंग भरें...

विद्यार्थियों के लिए...

रंग भरने का आनंद, संस्कारों के संग...

बच्चो के लिए नये, आकर्षक व ज्ञानवर्धक खेल

साँप-सीढ़ी

डार्ट गेम

कर्मफल

ये साहित्य और खेल नजदीकी आश्रम या सत्साहित्य सेवाकेन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं अथवा (०७९) ६१२१०७६९ पर सम्पर्क करके मँगवा सकते हैं।

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2021-2023
Issued by SSPO's-AHD
Valid upto 31-12-2023
LWPP No. PMG/NG/045/2021-2023
(Issued by PMG GUJ. valid upto 31-12-2023)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

निरापद वटी

संक्रमण से बचाये, बुखार, कफ, खाँसी, कमजोरी भगाये

निरापद वटी संक्रमण का नाश कर तद्जन्य बुखार, कफ, खाँसी, कमजोरी आदि लक्षणों से शीघ्र राहत दिलाती है । संक्रमण के दुष्प्रभाव से श्वसन-तंत्र (Respiratory System) में होनेवाली विकृति को दूर करती है, कफ का नाश करती है । विटामिन 'सी' के द्वारा रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है । यह बुखार की उत्कृष्ट औषधि है, साथ में रसायन (tonic) होने से बलदायक भी है । संक्रमण के प्रभाव से आनेवाली कमजोरी को दूर करने में सहायक है ।

श्रेष्ठ औषधियों से बनी यह निरापद वटी संक्रमण से सुरक्षा करने में भी अत्यंत लाभदायी है । सुरक्षा हेतु २-२ गोलियाँ दिन में २ बार १५ दिन तक लें ।

(बुखार उतरने के बाद आयी हुई कमजोरी को दूर करने हेतु आश्रमों में व समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध 'वज्र रसायन' की १ गोली प्रतिदिन दूध अथवा शहद के साथ लें ।)

स्मृति व दिमागी शक्ति वर्धक रसायन

शंखपुष्पी सिरप

स्मरणशक्ति बढ़ाने हेतु यह एक दिव्य औषधि है । साथ ही यह मानसिक तनाव, थकावट अनुभव करना, सहनशक्ति का अभाव, चिड़चिड़ापन, निद्राल्पता, मन की अशांति, चक्कर आना तथा उच्च रक्तचाप (hypertension) आदि रोगों में भी लाभप्रद है ।

संक्रमण से रक्षा व रोगप्रतिरोधक शक्तिवर्धन हेतु उत्पाद

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में व समितियों के सेवाकेन्द्रों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७३०, ९२१८११२२३३. ई-मेल : contact@ashramestore.com